Page No. ___ Date ___

पाठ 9 — कबीर की साखियाँ

संकेत1 – जाति - - - - - - - - - म्यान।

प्रसंग – यह साखी हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत' के 'कबीर की साखियाँ' नामक पाठ से ली गई है। इसके कवि कबीरदास जी हैं।

अर्थ – कबीरदास जी कहते हैं कि हमें कभी भी सज्जन व्यक्ति की जाति पर ध्यान नहीं देना चाहिए बल्कि हमें तो उसके गुणों के आधार पर उसका सम्मान करना चाहिए। उससे हमें ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। जैसे, तलवार की कीमत उसके म्यान में पड़े रहने से नहीं होती, बल्कि तलवार की धार में छिपी होती है।

संकेत2 – आवत - - - - - - - एक की एक।

अर्थ – प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि हमें किसी के अपशब्दों का जवाब कभी भी अपशब्दों से मत दो। इससे तो अपशब्द बढ़ने के बजाय घटते-घटते एक दिन खत्म हो जाएंगे।

संकेत3 – माला - - - - - - - सुमिरन नाहिं।

अर्थ – प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि अगर आपका मन प्रभु की भक्ति में नहीं लगता है, तो फिर हाथ में माला लेकर घूमने और मुख से जीभ के द्वारा प्रभु का नाम लेना बेकार है। अगर प्रभु को पाना है, तो हमें एकाग्रचित्त होकर उनकी भक्ति करनी होगी।

संकेत4 – कबीर घास - - - - - - - दुहेली होइ।

अर्थ – प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि हमें कभी भी किसी को छोटा समझकर उसका निरादर नहीं करना चाहिए। जैसे, घास को छोटा समझकर हर वक्त उसे दबाना नहीं चाहिए क्योंकि अगर वही तिनका उड़कर आँख में पड़ जाए तो हमें बहुत पीड़ा होती है।

संकेत5 – जग में - - - - - - - सब ...

अर्थ – प्रस्तुत साखी में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि व्यक्ति का मन शांत होता है, तो दुनिया में उसका कोई शत्रु नहीं हो सकता।

Scanned with CamScanner

यदि दुनिया का हर व्यक्ति स्वार्थ और क्रोध जैसी भावनाओं का त्याग कर दे तो हर व्यक्ति दयालु और महान बन सकता है।

पाठ से —

उ०१ = 'तलवार का महत्व होता है म्यान का नहीं' उक्त उदाहरण से कबीर यह कहना चाहते हैं कि असली चीज की कद्र करनी चाहिए। दिखावे वस्तु का कोई महत्व नहीं होता। जिस प्रकार तलवार की मजबूती और उसकी धार देखी जाती है। किसी व्यक्ति की पहचान उसकी काबलियत के अनुसार तय होती है न कि कुल, जाति, धर्म के अनुसार। उसी प्रकार ज्ञान का महत्व है।

उ०२ = कबीरदास जी की इस पंक्ति के द्वारा केवल माला फेरकर दिखावे और आडम्बर की भक्ति करने वालों पर व्यंग्य करते हैं। वे कहते हैं कि भगवान का स्मरण एकाग्रचित्त होकर करना चाहिए। यदि हमारा मन चारों दिशाओं में भटक रहा है, और हम मुख से राम का नाम स्मरण कर रहे हैं तो वह सच्ची भक्ति नहीं है।

उ०३ = घास का अर्थ है - पैरों में रहने वाली तुच्छ वस्तु। कबीरदास जी अपने दोहे में घास तक की निंदा करने से मना करते हैं। जो हमारे पैरों के नीचे होती है। कबीर के दोहे में घास का विशेष अर्थ है - दबे कुचले व्यक्ति। कबीर के दोहे का यही संदेश है कि हमें छोटे और बड़े का भेदभाव न करके सभी का सम्मान करना चाहिए।

उ०५ = जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।

पाठ से आगे —

1. 'या - - - - - - - - खोय' इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात को गई है। 'आपा' अहंकार के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। यहाँ आपा घमंड का द्योतक है। यह मनुष्य में धन, बल या अन्य कारणों से उत्पन्न हुआ है। इसी घमंड के कारण वह सबको अपने से हीन समझता है।

Scanned with CamScanner

उ०२= आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में अंतर हो सकता है —
(1) आपा का अर्थ है — अहंकार और आत्मविश्वास का अर्थ है अपने ऊपर विश्वास।
(2) आपा का अर्थ है — अहंकार और उत्साह का अर्थ है — किसी कार्य को करने का जोश।

उ०३= कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उडि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ॥
कबीर की इस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के ... मिलते हैं कि हमें तिनके की भी अवहेलना नहीं करनी चाहिए। उसी तरह समाज में हर व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए। भेदभाव समाप्त होना चाहिए चाहे वह जातिगत हो या आर्थिक।

उ०४= कबीर के दोहों को साखी इसलिए कहा जाता है क्योंकि साखी शब्द साक्षी शब्द का तद्भव रूप है जिसका अर्थ है — आँखों देखा। इनमें श्रोता को गवाह बनाकर साक्षात् ज्ञान दिया गया है। कबीर समाज में फैली कुरीतियां, जातीय भावनाओं और बाह्य आडंबरों को अपने साक्षी ज्ञान द्वारा समाप्त करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त कबीर का दोहा कुछ न कुछ सीख अवश्य देता है इसलिए भी उन्हें साखी कहा गया अर्थात् सीख देने वाला।